राम-रहीम और खून की प्यास
(डबल ... एजेण्ट००½ राम-रहीम सीरीज़)
लेखक : बिमल चटर्जी •चित्रांकन : दिलीप कदम , हरिश्चंद्र चव्हान , त्रिशूल कॉमिक्स

क रात राम-रहीम जब काफी रात गये घर वापस लौटे तो राम के पिता कर्नल
ध्रव ने उन्हें काफी डांटफटकार लगाई। साथ ही चेतावनी भी दी-
यदि आइन्दा से तुम दोनों बिना बताए नौ बजे के बाद घर से बाहर रहे तो मुझसे बुरा कोई न होगा।
शुक्र है। सस्ते में आज छूट गई।

के बाद राम-रहीम खाना खाकर सो थे। अगले दिन सुबह जब वे नाश्ता कर थे तो चीफ मुखर्जी का फोन आया। होंने उन्हें तत्काल ऑफिस पहुंचने के ए कहा। अतः राम-रहीम नाश्ता करने पश्चात् उनके ऑफिस में जा पहुंचे।
कहिए चीफ! आपने हमें अचानक कैसे याद किया?

तब मुखर्जी ने उन्हे एक कुख्यात अपराधी शाकाल के बारे में बताया, जो दुनिया की नजरों में मर चुका था। और संयोग से उसे राम-रहीम के कारण ही हैलीकॉप्टर से समुद्र में कूदकर आत्महत्या करनी पड़ी थी।
शाकाल मरा नहीं है, बल्कि जिन्दा है। कल रात मुझे उसका फोन आया था। उसने मुझे धमकी दी है कि वह न केवल इस बार तुम दोनों से बदला लेगा, बल्कि हिन्दुस्तान में खून की नदियां भी बहा देगा।
ओह!

चीफ! उसका केस चार-पांच साल पुराना हो चुका है। क्या उसके बारे में विस्तृत जानकारी पाने के लिए हमें उसकी फाइल मिल सकती है?
मिल सकती है, लेकिन अभी नहीं, क्योंकि शाकाल की ब्लैक फाइल स्ट्रांगरूम की सेफ में रखी है और उसका लॉक रात ग्यारह बजे से पहले नहीं खुल सकता।

चीफ मुखर्जी ने शाकाल से संबंधित ब्लैक फाइल अगले दिन राम के घर पर उसके जन्मदिन पर देने का वायदा किया।
ठीक है चीफ! कल मैं अपने जन्म-दिन पर आपके आने का इंतजार करूंगा। अब हमें आज्ञा दीजिए।
ठीक है!

अगले दिन शाम को जब चीफ मुखर्जी ने तोहफे के पैकेट के रूप में राम को वह फाइल थमाई...

...राम-रहीम ने एक साथ अपने रिवॉल्वर निकाल लिए।
खबरदार, यदि अपनी भलाई चाहते हो तो चुपचाप अपने हाथ ऊपर उठा लो!
क्या मतलब?
राम!
क्या बकते हो?

जैसा हम कहते हैं, वैसा ही करो, वरना हम गोली मारने में जरा भी नहीं हिचकिचायेंगे।
ओह!

मजबूर हो तीनों ने अपने-अपने हाथ ऊपर उठा दिए।
कर्नल! तुम्हें हमारे साथ चलना है। चलो, चुपचाप दरवाजे की ओर बढ़ो। ध्यान रहे, यदि तुमने कोई भी गलत हरकत करने की कोशिश की तो हम तुम्हारी पत्नी को गोली मार देंगे।
उफ! यह राधा की जिन्दगी का प्रश्न है। मुझे इनके साथ जाना ही होगा।

कर्नल राघव हाथ उठाये दरवाजे की ओर बढ़े।
दरवाजा खोलकर बाहर निकलिए।

फिर कर्नल राघव तो द्वार खोलकर बाहर निकल गये, लेकिन जैसे ही राम ने उनके पीछे-पीछे बाहर निकलना चाहा, एक फौलादी घूंसा उसके चेहरे पर पड़ा।
धड़ाक!
आह!

रहीम ने पलटकर देखा-
क्या हुआ?

लेकिन वह भी बिजली की गति से अपने चेहरे पर पड़ने वाले घूंसे से स्वयं को बचा नहीं सका।
उफ!

और जब तक वे कुछ समझ पाते, राम-रहीम की एक और जोड़ी उनके सामने आकर खड़ी हो गई।
बस लड़को! तुम्हारा खेल खत्म हुआ! अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि सबकुछ साफ-साफ बता दो!

परन्तु पहले वाले राम-रहीम बजाय कुछ बताने के, आने वाले राम-रहीम से भिड़ गये।
हाय!
ढिशुम!
उफ!

काफी देर तक द्वंद्व युद्ध होने के पश्चात असली रहीम ने नकली राम को मार गिराया।
कड़ाक!
ओह! यह तुमने क्या किया रहीम? यह तो मर चुका है।
राम! आखिर यह क्या चक्कर है? कौन हैं यह दोनों और तुम दोनों अब तक कहां थे और ये तुम्हारी जगह यहां कैसे आ गये?
प्यारे दोस्तो! यहां तक की कहानी आप "राम-रहीम और ब्लैक फाइल्स" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।
राम ने एक गहरी सांस ली और बोला—
डैडी! असली चक्कर क्या है, यह तो मैं भी नहीं जानता, लेकिन यह साफ है कि यह दोनों आपको और मुखर्जी अंकल के पैकेट को कहीं ले जाना चाहते थे और यह दोनों यहां इसी उद्देश्य से टिके हुए थे।
यह बात तो मैं भी इनकी हरकतों से समझ गया हूं। जानना तो मैं यह चाहता हूं कि तुम्हारी जगह यह दोनों नकली राम-रहीम यहां कैसे आ गये और तुम दोनों इस बीच कहां थे?

तो सुनिए, मैं आपको पूरी बात बताता हूं। बाईस जनवरी की रात...

...जब मैं और रहीम नाइट शो देखकर मोटरसाइकिल पर घर वापस लौट रहे थे...
आज जरूर आंटी की डांट खानी पड़ेगी।
और यह डांट तुम्हारे कारण ही खानी पड़ेगी। न तुम नाइट शो देखने की जिद करते और न...।

अरे! यह सड़क के बीचोबीच कार किसने खड़ी कर दी?

सावधान राम भइया, मुझे तो दाल में कुछ काला लग रहा है।

नहीं। वह देखो, कार के निकट खड़ी वह युवती हमें मदद के लिए रुकने का इशारा कर रही है। शायद उसकी कार में कोई गड़बड़ी आ गई है।
हैल्प- हैल्प!

क्या बात है मैडम? हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं?
मेरी गाड़ी में कुछ खराबी आ गई है। प्लीज, मेरी मदद कीजिए।

ठहरिए, हम देखते हैं। उतरो रहीम।
एक मिनट भइया!
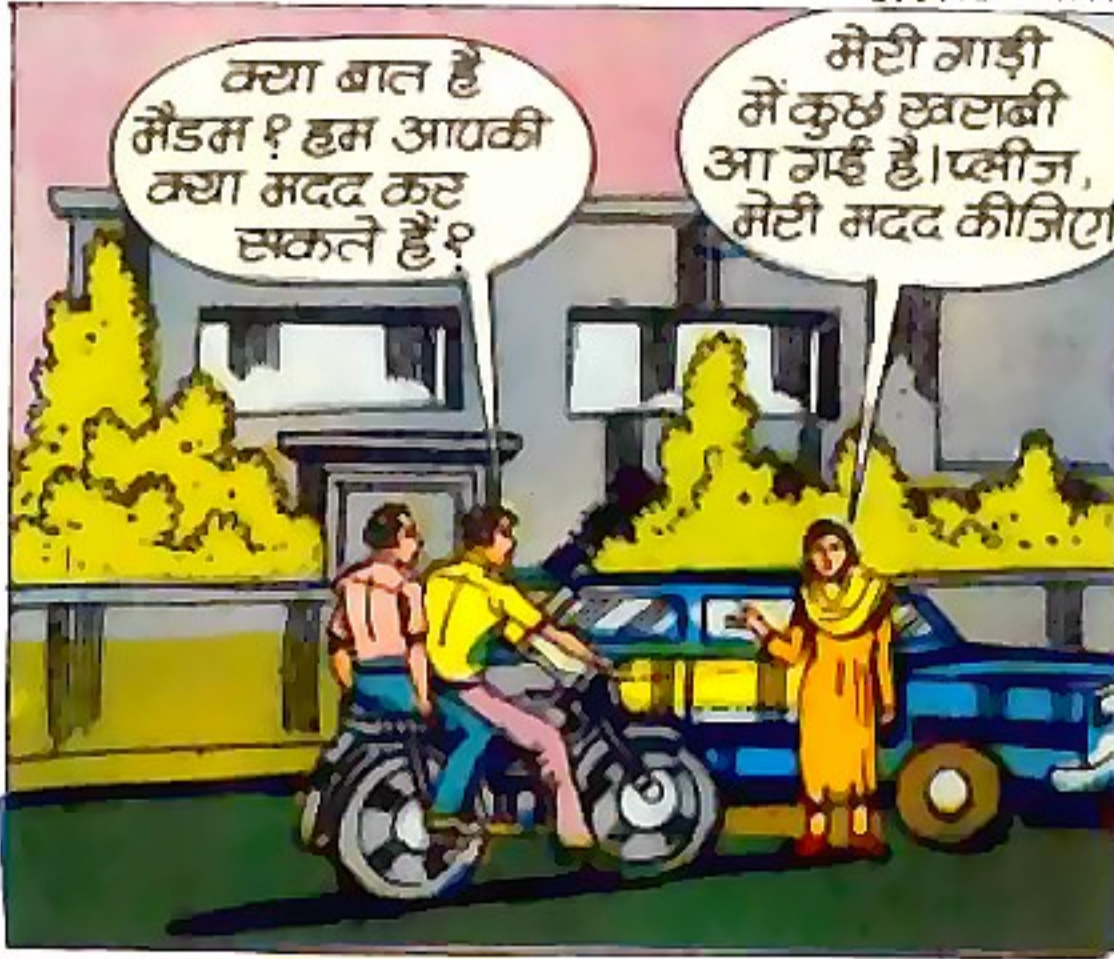
...और जैसे ही हम मोटरसाइकिल से उतरकर कार की ओर बढ़े, उस युवती समेत कई गनधारी नकाबपोशों ने हमें चारों ओर से घेर लिया...

खबरदार, अपने हाथ ऊपर उठा लो, वरना पलक झपकते ही तुम्हारे जिस्म छलनी हो जायेंगे।
हुम्म! आखिर वही हुआ!
ओह! तो रहीम का अन्देशा ठीक ही निकला।

अरे! तुम्हारी तो ऐसी की तैसी। अभी तुम्हें मालूम नहीं कि हम कौन हैं?

मैं कहती हूं रुक जाओ, वरना नाहक ही अपने प्राणों से हाथ धो बैठोगे।
रहीम, रुक जाओ!

यह तुम कह रहे हो?
हां, हाथ ऊपर उठा लो।

गुड! तलाशी लो इनकी। सिनेमा की टिकटें भी जरूर मिलनी चाहिएं।
टिकटें! हुम्म! तो ये जानते थे कि हम सिनेमा देखकर यहीं से गुजरेंगे। यानी इन्होंने पहले से ही हमें पकड़ने की योजना बना रखी थी।

...मेरी और रहीम की तलाशी ली जाने लगी...

फिर हमारे बटुओं आदि समेत सिनेमा की टिकटें भी उन्होंने अपने कब्जे में करलीं...
डबल एजेण्ट, बाहर आओ।
???

...अगले ही पल कार का पिछला दरवाजा खुला और उसमें से जो शख्स बाहर निकले, उन्हें देखकर हम बुरी तरह चौंक उठे...
हैं! हमारे हमशक्ल!
और हमारे जैसे कपड़े भी पहने हुए हैं।

लो राम, तुम यह बटुआ और रूमाल आदि अपनी जेब में रख लो।
यस मैडम!
???

माई गॉड! यह तो शत-प्रतिशत मेरी आवाज में बोल रहा है। और इसकी चाल-ढाल भी बिल्कुल मेरे ही जैसी है।

और यह दोनों टिकटें और यह सामान तुम अपनी जेब में रख लो।
यस मैडम!
!!!
या खुदा! य
सिर्फ मेरा हमशक्
ही नहीं, बल्कि
इसकी चाल-ढाल व
आवाज भी मुझसे
बिल्कुल मिलती
जुलती है।
चलो, अब तुम दोनों इनकी मोटरसाइकिल लेकर तुरंत इनके घर की ओर रवाना हो जाओ। तुम्हें ध्यान है न कि तुम्हें क्या करना है?
यस मैडम! आप निश्चिन्त रहें। कोई गड़बड़ी नहीं होगी।
गुड! जाओ, कल किसी समय फोन अवश्य कर लेना।
यस मैडम!
...और वे दोनों हमारी मोटरसाइकिल प
सवार होकर वहां से चले गये...
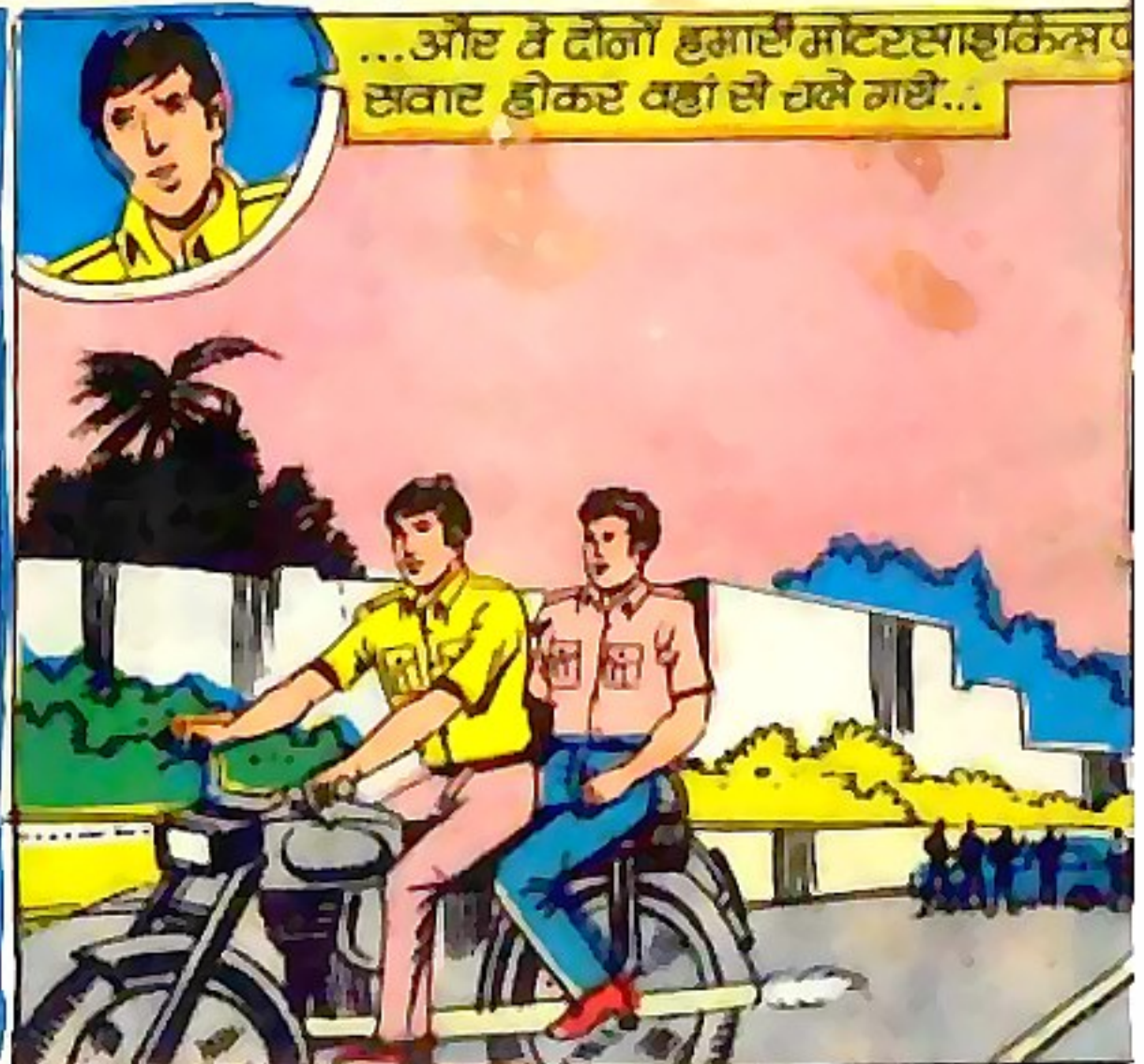
...उनके जाने के पश्चात्...
नम्बर दो और चार, तुम इनकी आंखों पर पटि्टयां बांध दो। साथ ही हाथ भी।
यस मैडम!

...और तब हमारी आंखों पर पटि्टयां बांधने के साथ-साथ हमारे हाथ भी बांध दिये गये...
चलो, कार में बैठो।
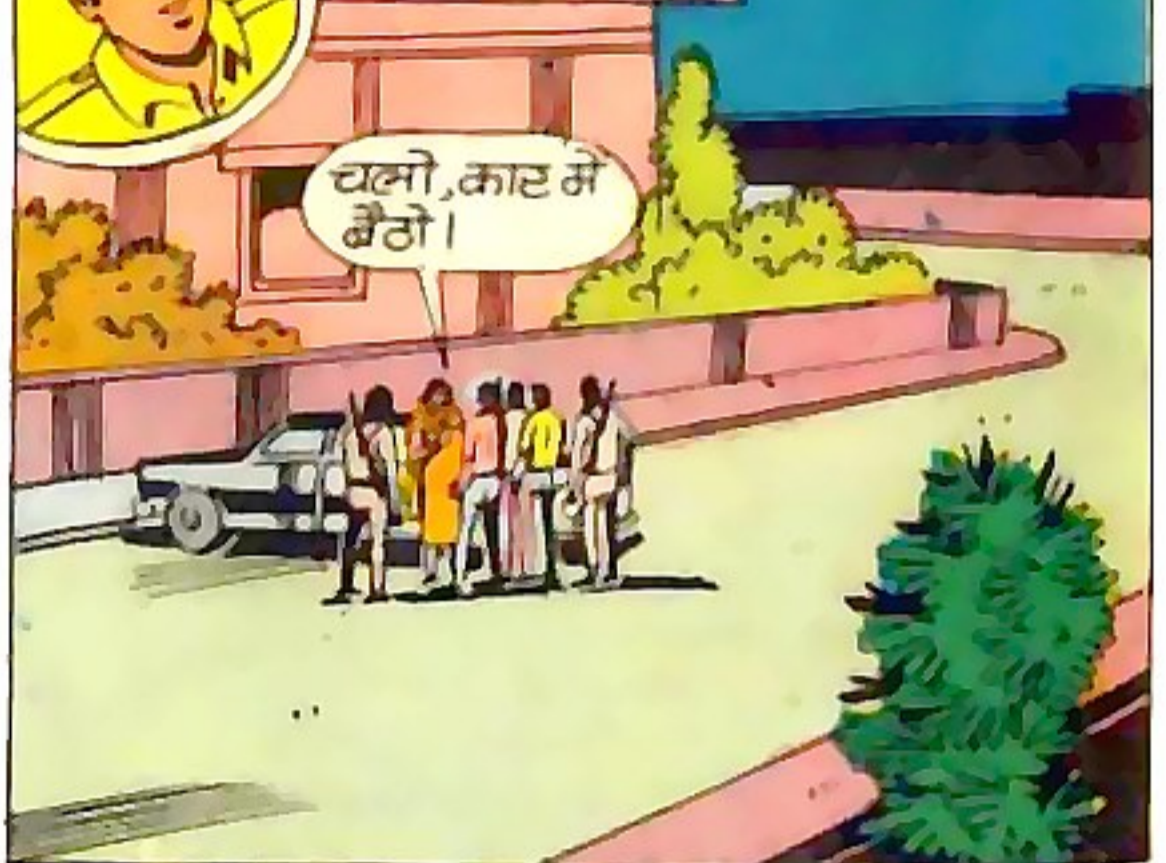
मजबूरन हमें उनकी कार में बैठना पड़ा। हमारे साथ कुछ नकाबपोश व वह युवती भी बैठी...
बाकी तुम सब दूसरी गाड़ी से अड्डे नम्बर दो पर पहुंचो।
यस मैडम!
!!!

पता नहीं यह सब कौन हैं और हमसे क्या चाहते हैं। सबसे विचारणीय प्रश्न तो यह है कि इन्होंने हमारे हमशक्लों को हमारे घर क्यों भेजा?

उफ! हम चाह कर भी फिलहाल कुछ नहीं कर सकते।
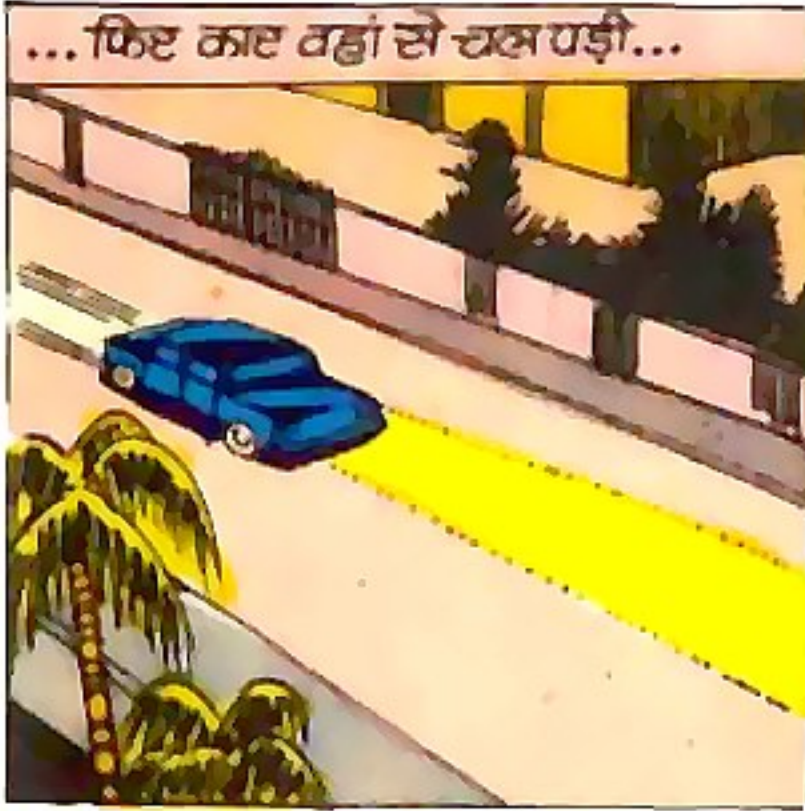
...फिर कार वहां से चल पड़ी...
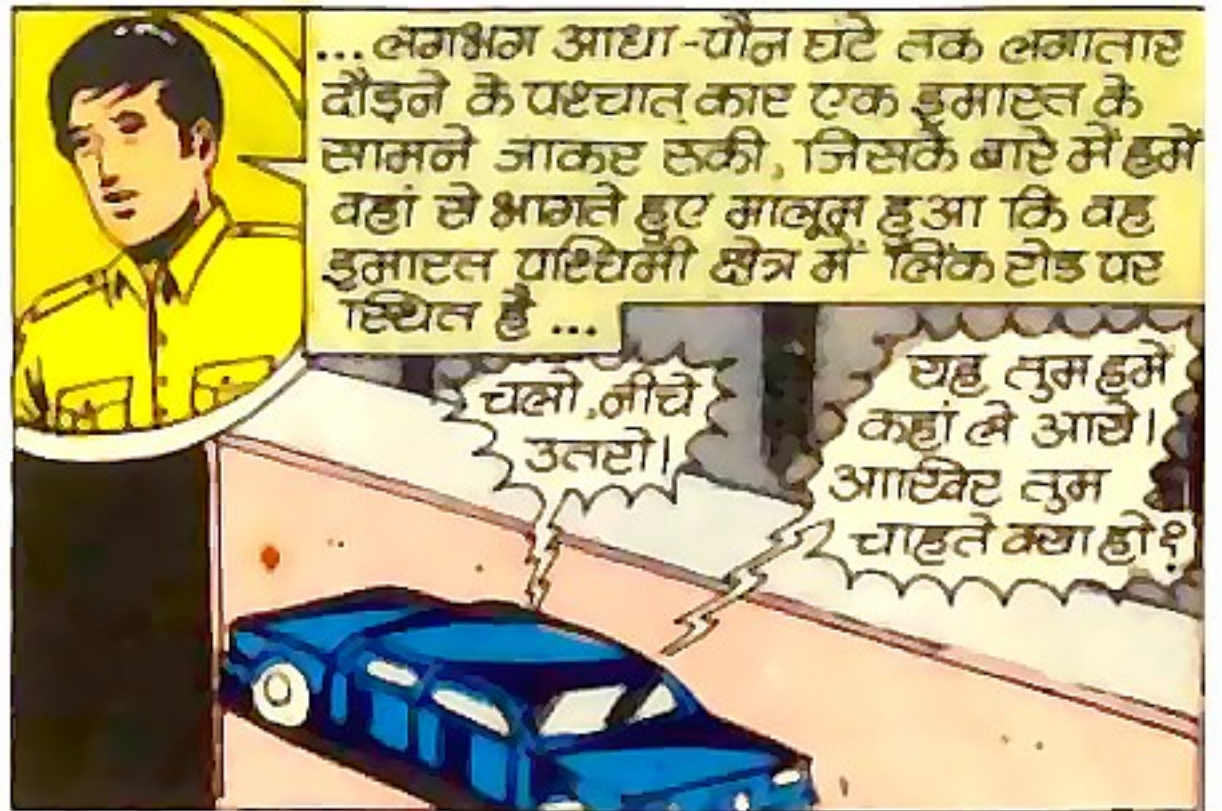
...लगभग आधा-पौन घंटे तक लगातार दौड़ने के पश्चात् कार एक इमारत के सामने जाकर रुकी, जिसके बारे में हमें वहां से भागते हुए मालूम हुआ कि वह इमारत पश्चिमी क्षेत्र में लिंक रोड पर स्थित है...
चलो, नीचे उतरो!
यह तुम हमें कहां ले आये! आखिर तुम चाहते क्या हो?
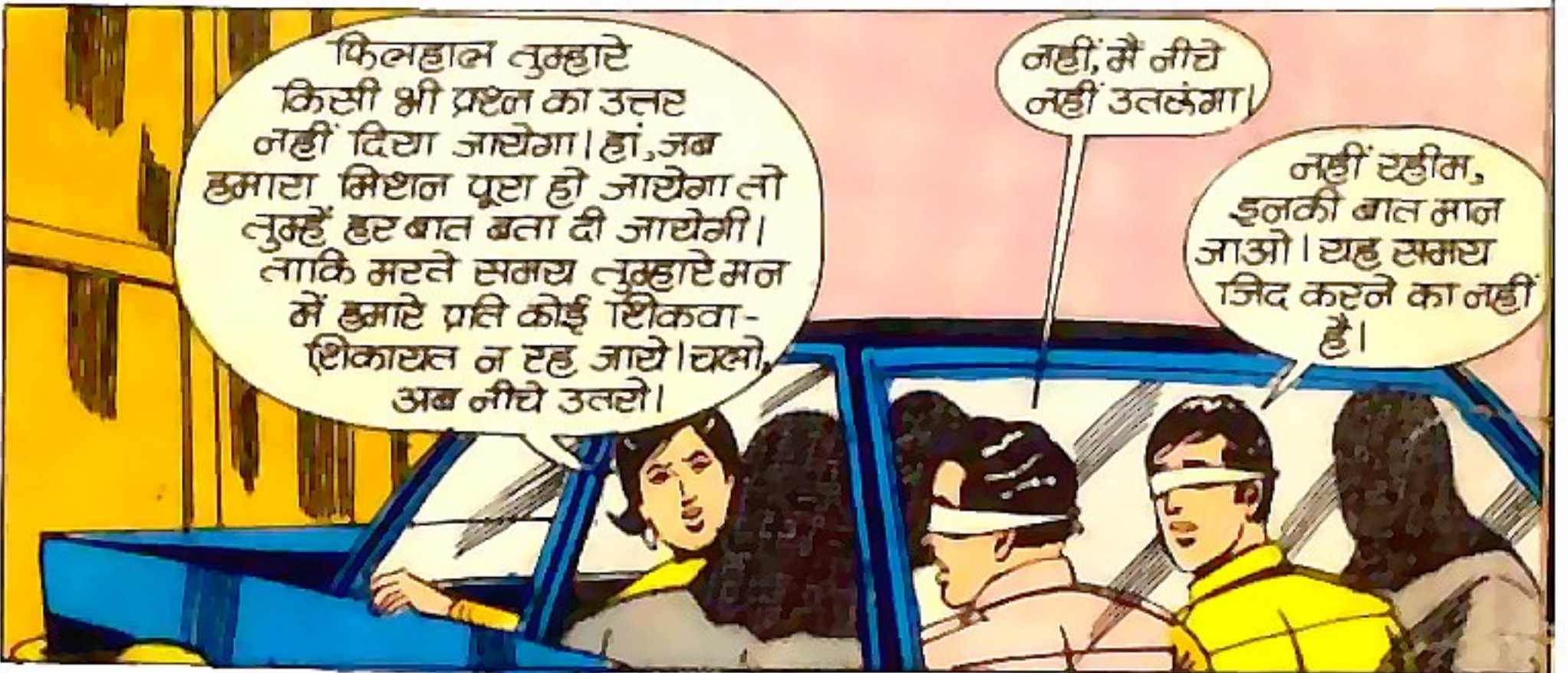
फिलहाल तुम्हारे किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जायेगा। हां, जब हमारा मिशन पूरा हो जायेगा तो तुम्हें हर बात बता दी जायेगी। ताकि मरते समय तुम्हारे मन में हमारे प्रति कोई शिकवा-शिकायत न रह जाये। चलो, अब नीचे उतरो!
नहीं, मैं नीचे नहीं उतरूंगा।
नहीं रहीम, इनकी बात मान जाओ। यह समय जिद करने का नहीं है।

...और उन लोगों ने हमें ले जाकर उस इमारत के एक कमरे में बंद कर दिया...
बस, एक बात ध्यान रखना। यदि तुम दोनों ने यहां से भागने की कोशिश की तो सिवाय गोलियों के, और कुछ नहीं मिलेगा।

...उनके जाने के बाद...
राम भइया! आखिर तुम हाथ-पर-हाथ धरे चुप क्यों बैठे हो? कुछ करते क्यों नहीं? पता नहीं ये लोग कौन हैं और क्या चक्कर चला रहे हैं?
कुछ करने का मौका मिले तभी करूं न! देख नहीं रहे हो, इस समय भी हम पर कितना सख्त पहरा है।

...इस तरह दो दिन हम उनकी कैद में रहे और कुछ नहीं कर पाये।
फिर ?
!!!
???

लेकिन आज शाम हमारे हाथ एक मौका लग ही गया ...
लो, चाय पीलो।

... मैंने तुरन्त रहीम को इशारा किया ...

... और दोनों उस पर टूट पड़े ...
ढिशुम
कड़ाक!
आह!

... हमने शीघ्र ही उसे बेहोश कर दिया ...
रहीम! तुम इसका रिवॉल्वर निकाल लो। मैं बाहर की टोह लेता हूं।
ठीक है।
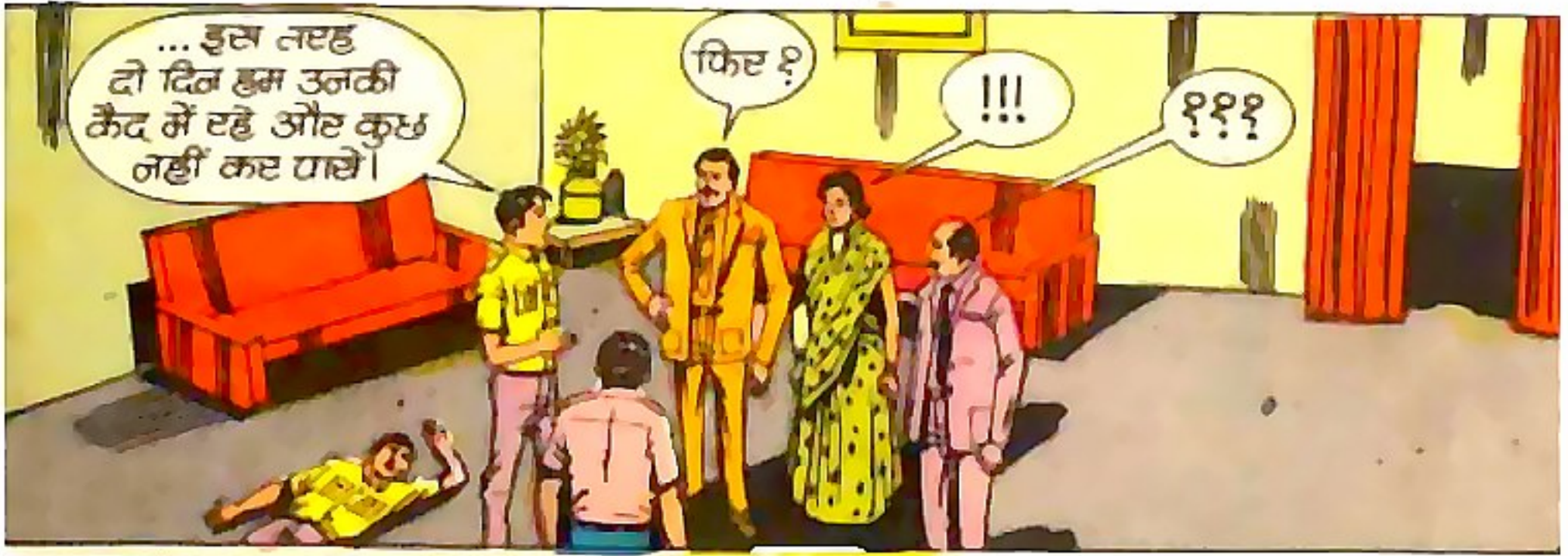
...संयोग से उस समय वहां चार ही पहरेदार थे, जिनमें से एक को हम बेहोश कर चुके थे...

रहीम! मौका अच्छा है। वे केवल तीन हैं और ताश खेलने में मगन हैं। हम उन्हें आसानी से कवर करके यहां कैद कर सकते हैं।
तो फिर चलो।

...हम दबे पांव उनके निकट पहुंचे...
हैण्ड्स अप!
त...तु...तुम!

खबरदार, कोई भी गलत हरकत करने की कोशिश मत करना, वरना बेमौत मारे जाओगे।
???

यदि अपनी भलाई चाहते हो तो चुपचाप अपने हथियार निकालकर सामने डाल दो।
ल... लेकिन!

शटअप, जैसा कहा जा रहा है, वैसा ही करो।

...उन लोगों ने भयभीत हो अपने हथियार हमारे सामने डाल दिये...
...जिन्हें मैंने अपने कब्जे में ले लिया...

चलो, अब हाथ ऊपर करके हमारी कोठरी की ओर बढ़ो।
जल्दी करो।

...उन्होंने हमारे आदेश का पालन किया और हम उन्हें उसी कोठरी में बंद करके...

...उस इमारत से बाहर निकल आये...
इन बदमाशों से तो हम बाद में निपटेंगे, पहले हमें किसी तरह घर पहुंचना है। पता नहीं घर में इस समय क्या हंगामा मच रहा होगा?
यह तो ठीक है राम भइया, लेकिन यहां कोई सवारी मिले तब न।

...लेकिन हमारी किस्मत अच्छी थी, जो उसी इलाके में किसी सवारी को छोड़कर लौटती टैक्सी हमें मिल गई...
टैक्सी!

डिफेंसलेन। जल्दी करो ड्राइवर!
बहुत अच्छा साहब!

...टैक्सी दौड़ पड़ी...

...लेकिन जब टैक्सी हमारे घर से कुछ दूरी पर पहुंची...
गाड़ी रोको ड्राइवर!
जी साहब!

चीं...
चीं...
चीं...

उतरो रहीम!
लेकिन यहां!
अरे! उतरो तो सही!

लो ड्राइवर! बाकी के पैसे भी तुम ही रख लो।
थैंक्यू साहब!
???

तुम्हारे पास बटुआ कहां से आया? तलाशी में तो अपहरण-कर्ताओं ने हमारा सबकुछ निकाल लिया था।

यह बटुआ उसी नकाबपोश का है, जिसे हमने बेहोश किया था। रिवॉल्वर के साथ-साथ मैंने उसकी जेब से उसका बटुआ भी निकाल लिया था।
गुड! कभी-कभी तुम अक्लमंदी में मुझसे भी बाजी मार जाते हो।

लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि तुम घर के सामने उतरने की बजाय यहां क्यों उतर गये?
हम घर में सामने के गेट से नहीं, बल्कि पिछवाड़े की दीवार फांदकर प्रवेश करेंगे।

वह क्यों?

सावधानी के तौर पर। हो सकता है, दुश्मन सामने से हमारे घर पर नजर रखे हों।
ओह!

...इस तरह हम कोठी के पिछवाड़े की दीवार फांदकर भीतर प्रविष्ट हुए...

...और जब हम इस कमरे के दरवाजे पर पहुंचे...
मैं कालबेल बजाता हूं!
ठहरो रहीम!

क्यों, अब क्या हुआ?
एक बार मैं भीतर का निरीक्षण करके अपनी संतुष्टी करना चाहता हूं।

...उस समय नकली राम-रहीम पैकेट के साथ-साथ आपको भी अपने साथ ले जाना चाहता था। अतः मुझे सारा माजरा समझते देर नहीं लगी...
चलिए कर्नल! दरवाजे की ओर बढ़िए।

...उसके बाद तो आप जानते ही हैं, क्या हुआ?
हुम्म!

मि॰ मुखर्जी! आखिर इस पैकेट में ऐसी क्या चीज है, जिसे पाने के लिए इन दोनों लड़कों ने इतना बड़ा खतरा मोल लिया।
इसमें... इसमें तो...!

मारे गये?

देखो दोस्त! मुझसे अब झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया है कि राम-रहीम का तुमसे और तुम्हारे विभाग से कोई विशेष संबंध है। बताओ, क्या है इस पैकेट में?
अब तो सच बताना ही पड़ेगा।

सुनो मित्र, इस पैकेट में राम के लिए एक उपहार के साथ-साथ एक फाइल भी है, ब्लैक फाइल! जो एक कुख्यात मुजरिम शाकाल से संबंधित है और इस फाइल को मैं राम-रहीम के अध्ययन के लिए ही यहां लेकर आया था।
शाकाल!

हां बेटे, वह मरा नहीं, बल्कि जीवित है। परसों रात मुझे उसका धमकी भरा फोन आया था।
फिर चीफ मुखर्जी ने उन्हें सारा किस्सा बताते हुए...
...अंत में कहा -
अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपनी फाइल को स्ट्रांगरूम से निकलवाने की यह उसकी चाल थी...
...उसने मुझे इसी उद्देश्य से फोन किया होगा कि मैं उसके जीवित होने के बारे में जानकर तुम दोनों से कांटेक्ट करूंगा। और तुम्हारे हमशक्लों को उसने तुम्हारे घर भेजा, ताकि वे इस फाइल को अध्ययन के लिए मांगें और उसे ले उड़ें।
बिल्कुल यही बात होगी अंकल, वरना वह फाइल हाथ लगते ही वे यहां से खिसकने की न सोचते।
परन्तु ये मुझे अपने साथ क्यों ले जाना चाहते थे?
क्यों ले जाना चाहते थे और कहां ले जाना चाहते थे, इन सब प्रश्नों के उत्तर अब रहीम का हमशक्ल देगा...

...लेकिन चीफ अंकल! उससे पहले आप पुलिस को फोन करके उस इमारत को घेरने का आदेश दीजिए, जिसमें हमें कैद किया गया था, ताकि वहां बंद बदमाश कैद किये जा सकें।
ठीक है। साथ ही तुम्हारे हमशक्ल की लाश भी उठवाने के प्रबंध करता हूं।

नहीं अंकल! फिलहाल ऐसा मत कीजिएगा। यदि पुलिस वहां पहुंची तो अपराधी सतर्क हो जायेगा।
!!!
???
ओह!

आप अपना काम कीजिए। तब तक मैं रहीम के हमशक्ल को होश में लाकर उसका मुंह खुलवाने की कोशिश करता हूं।
ठीक है।

चलो रहीम, इसे उठाने में मेरी मदद करो। इसे स्टडीरूम में ले चलना है।
बहुत अच्छा भइया।

उसके बाद चीफ मुखर्जी फोन द्वारा पुलिस स्टेशन से संपर्क करने में जुट गये...

...और राम-रहीम बेहोश नकली रहीम को उठाकर स्टडीरूम की ओर चल दिए।
मेरा संदेह ठीक ही निकला। राम-रहीम सीक्रेट सर्विस में काम करते हैं।
!!!

स्टडीरूम में-
इसे कुर्सी के साथ बांध दो रहीम, ताकि यह होश में आने के बाद कोई उछल-कूद न कर सके।
अभी लो भइया।

फिर रहीम ने अपने हमशक्ल को रस्सी से कुर्सी के साथ जकड़ दिया और राम उसे होश में लाने के लिए उसके मुंह पर पानी के छींटे मारने लगा। तभी चीफ मुखर्जी, कर्नल राघव व राधादेवी भी वहां पहुंच गये।

शीघ्र ही –
आह! मैं कहां हूं?
तुम वहीं हो प्यारे, जहां थे। अब जरा अपने दिमाग को दुरुस्त करो और हमारे प्रश्नों का उत्तर दो।
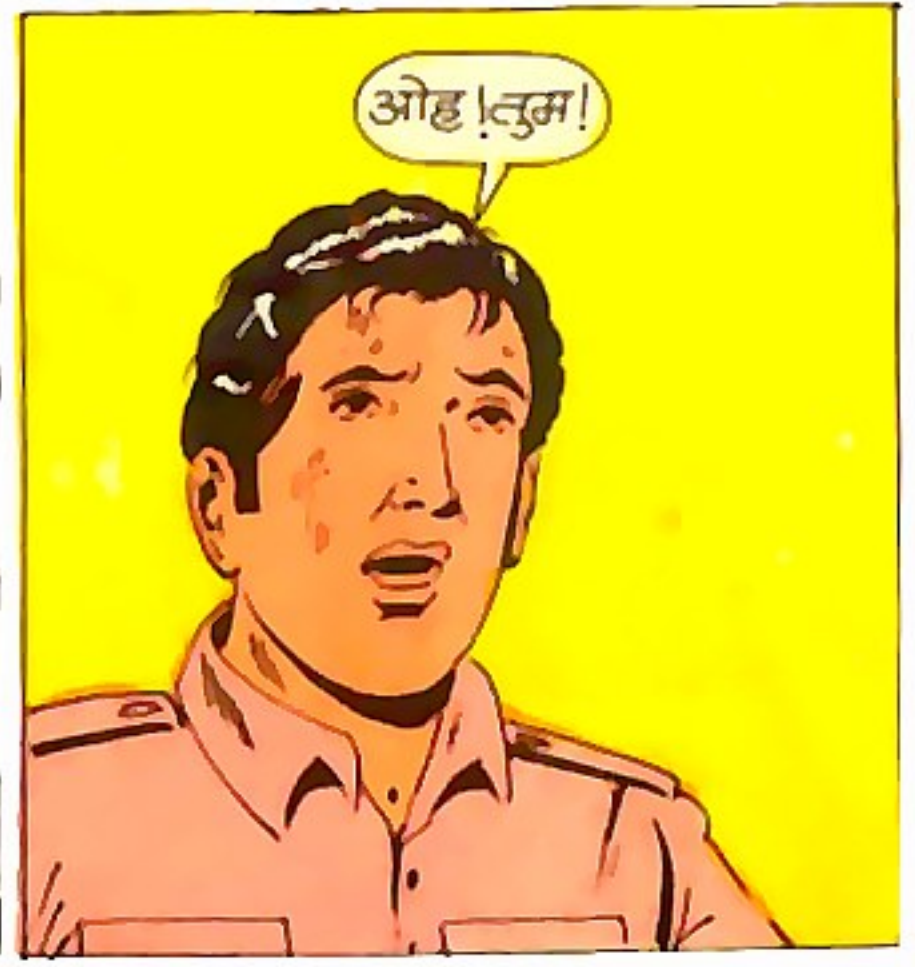
ओह! तुम!

बोलो, क्या तुम स्वयं हमारे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार हो या हम कोई दूसरा तरीका आजमाएं।
ध्यान रहे, तुम्हारा दूसरा साथी मेरे हाथों मारा जा चुका है।
क्याSSS?

यह सच है। यदि उसकी लाश देखना चाहो तो हम दिखा सकते हैं। उसके बाद भी यदि हमारे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए तो तुम्हारा भी वही अंजाम होगा।
ओह!

जल्दी बोलो, क्या कहते हो?
मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार हूं। पूछो, क्या पूछना चाहते हो?

गुड ! तो सबसे पहले तुम अपने विषय में बताओ। क्या तुम सचमुच रहीम के हमशक्ल हो या तुम्हारे चेहरे पर रहीम का मेकअप है।
मेरे चेहरे पर रहीम का मेकअप ही है। मेरा नाम चन्द्र है और मेरे साथी का नाम श्याम था। हम दोनों सगे भाई थे...

...हमारा इस दुनिया में कोई नहीं था। हम दोनों पेट भरने के लिए विशाल सर्कस में काम करते थे और तरह-तरह के करतब दिखाते थे...

...हम दोनों तरह-तरह की आवाजें निकालने में भी माहिर थे। यानी किसी भी व्यक्ति अथवा स्त्री की हू-ब-हू आवाज निकाल सकते हैं। लेकिन विशाल सर्कस कम्पनी के फेल हो जाने के बाद हम बेरोजगार हो गये और दर-ब-दर की ठोकरें खाने लगे...

...लेकिन फिर हमारे दिमाग में एक विचार आया और हम सड़कों पर ही अपने करतब दिखाने लगे...
...हमें अच्छी-खासी आमदनी होने लगी...

...एक दिन जब हम करतब दिखाने के बाद लोगों से मिले पैसे गिन रहे थे तो एक कार हमारे निकट आकर रुकी...
ऐ, इधर आओ।
???

क्या काम है मैडम?
यदि तुम हमारा एक काम कर दो तो दो माह के भीतर-भीतर पचास हजार रुपये कमा सकते हो।

क्या कहा SSS? पचास हजार रुपये।

हमें क्या करना होगा मैडम?
वह भी बता दिया जायेगा। बस, अभी इतना समझ लो कि उस काम में तुम्हें कुछ खतरा उठाना पड़ेगा।
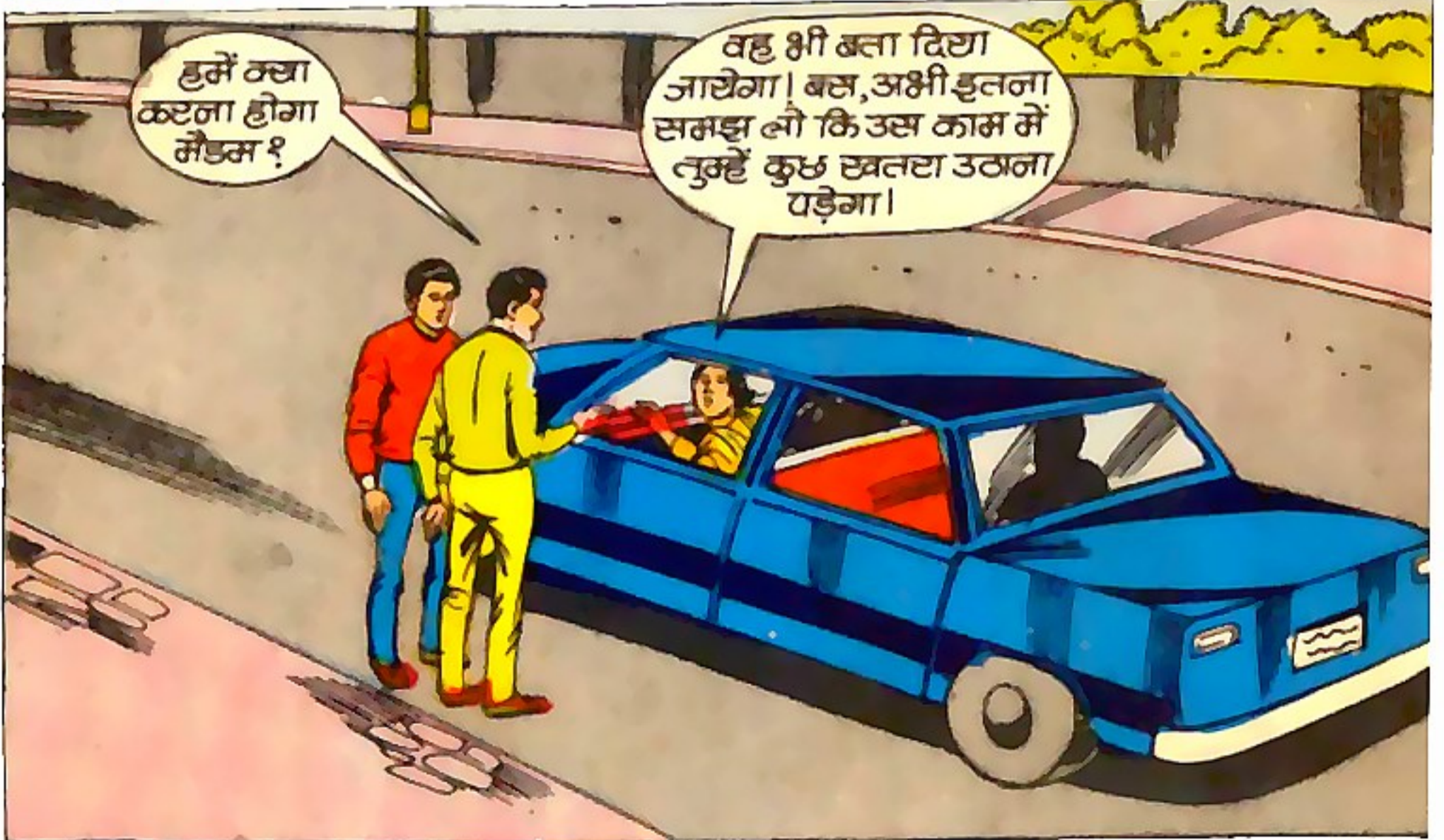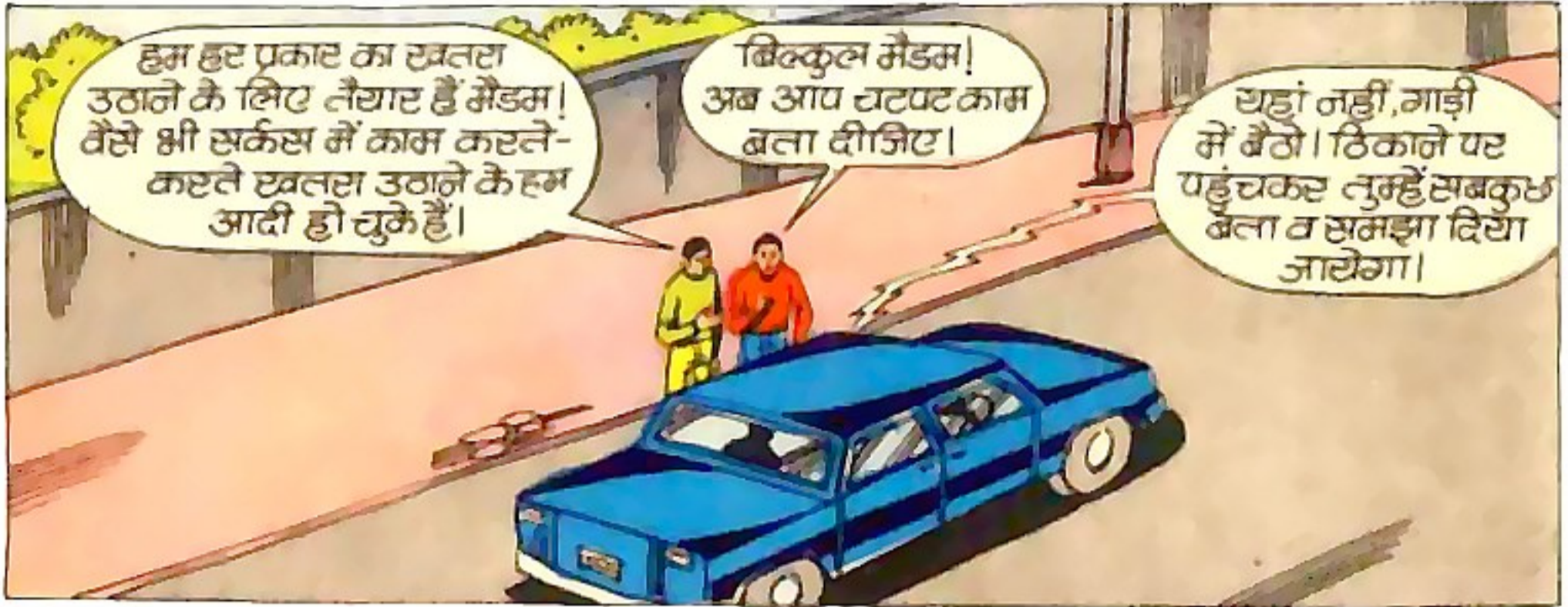
हम हर प्रकार का खतरा उठाने के लिए तैयार हैं मैडम! वैसे भी सर्कस में काम करते-करते खतरा उठाने के हम आदी हो चुके हैं।
बिल्कुल मैडम! अब आप चटपट काम बता दीजिए।
यहां नहीं, गाड़ी में बैठो। ठिकाने पर पहुंचकर तुम्हें सबकुछ बता व समझा दिया जायेगा।

...हम कार की पिछली सीट पर बैठ गये। वहां पहले से ही एक आदमी मौजूद था...
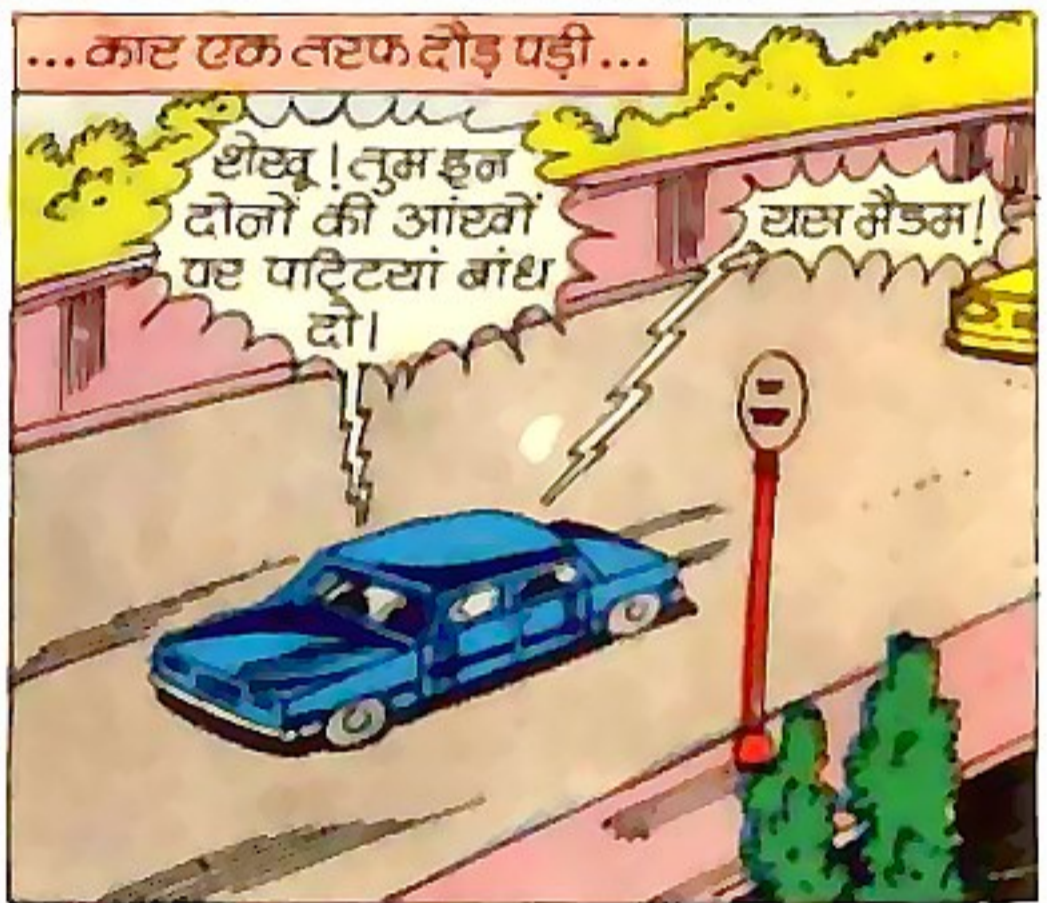
...कार एक तरफ दौड़ पड़ी...
शेखू! तुम इन दोनों की आंखों पर पट्टियां बांध दो।
यस मैडम!

...हमारी आंखों पर पट्टियां बांध दी गई थीं, इसलिए हम यह नहीं जान पाये कि हमें कौन-सी जगह अथवा कौन-सी इमारत, कोठी अथवा बंगले में ले जाया गया था...
शेखू! अब इनकी पट्टियां खोल दो।
यस मैडम!

...पट्टी खुलने पर हमें एक नकाबपोश दिखाई दिया, जिसने अपना नाम शाकाल बताया। साथ ही काम भी बताया...
तुम्हें दो हमउम्र लड़कों की जगह लेनी है और...।
...उसने एक ब्लैक फाइल के साथ-साथ तुम्हारे पिता का अपहरण करने के बारे में बताया और हम उसके लिए काम करने को तैयार हो गये। हमें उसी इमारत में ठहराया गया था, जहां तुम्हें कैद रखा गया था...

...उसके बाद से हमारी ट्रेनिंग शुरू हो गई। युवती के साथ हम तुम्हारा हर जगह पीछा करते और तुम दोनों की एक-एक हरकत का गहराई से अध्ययन करते...
...हमें तुम्हारे रिश्तेदारों, पिता व मित्र आदि सबके बारे में अच्छी तरह से बताया व समझाया गया था...

...एक महीने की ट्रेनिंग के पश्चात् जब हम तुम्हारी चाल-ढाल व आवाज निकालना अच्छी तरह सीख गये तो ऐसे मौके की तलाश में रहने लगे, जब हम तुम्हारी जगह ले सकें। हमारे चेहरों पर तुम दोनों का मेकअप अच्छी तरह से कर दिया गया था। और बाईस जनवरी की रात हमें वह मौका मिल गया, जब तुम दोनों नाइट शो देखकर घर वापस लौट रहे थे।
डबल एजेण्ट, तुम्हें सबकुछ याद है न कि तुम्हें क्या करना है?
यस मैडम!
!!!
???

कहकर नकली रहीम उर्फ चन्द्र खामोश हो गया।
मेरे पिता और ब्लैक फाइल को लेकर शाकाल ने तुम्हें किस पते पर पहुंचने के लिए कहा था?
पता तो नहीं बताया था, सिर्फ इतना कहा था कि हम तुम्हारे पिता को साथ लेकर लिंक रोड से गुजरें। मार्ग में ही हमें पिकअप कर लिया जायेगा...
???
!!!
???

...और कल चीफ मुखर्जी से मुलाकात करने के बाद लौटते समय हमने शाकाल को फोन द्वारा सूचित कर दिया था कि हम आज रात किसी भी समय अपना काम पूरा करके यहां से निकल पड़ेंगे।

हुम्म! तो इसका मतलब यह हुआ कि शाकाल या उसके आदमी आज लिंक रोड पर कहीं भी तुम्हारा इंतजार करेंगे।
हां!

अच्छा, क्या तुम बता सकते हो कि वह मेरे पिता का अपहरण क्यों करना चाहता था?
नहीं, इस संबंध में मुझे कुछ नहीं मालूम।

कोई बात नहीं। अब यह बात हम खुद मालूम कर लेंगे।

तुम क्या करना चाहते हो बेटे?

डैडी! आपको हमारे साथ चलना होगा। अब नकली राम-रहीम की जगह हम खुद लेंगे और शाकाल तक पहुंचेंगे।

क्या SSS?

यह तुम क्या कह रहे हो बेटे? इसमें तुम सबकी जान को खतरा हो सकता है।

आप घबराइए नहीं मम्मी! हमें कुछ नहीं होगा। फिर एक संगीन मुजरिम को पकड़ने के लिए थोड़ा-सा खतरा तो उठाना ही पड़ेगा।

अब आप मेरी बात ध्यान से सुनें। हमारे जाने के ठीक पन्द्रह मिनट बाद आप चन्द्र को और श्याम की लाश को पुलिस के हवाले कर दें और ट्रांसमीटर पर मेरी काल का इंतजार करें।
ठीक है।

उसके बाद राम-रहीम कर्नल राघव के साथ अपनी कार पर सवार हुए और घर से निकल पड़े।
जैकब। कर्नल की कोठी से एक कार निकल रही है।
जरूर उसमें हमारे डबल एजेन्ट ही होंगे।

जब राम-रहीम की कार उस कार के पास से गुजरी।
जैकब! उसमें हमारे एजेन्ट राम-रहीम ही सवार हैं। पिछली सीट पर राम कर्नल राघव को कवर किये हुए बैठा है।
गुड!

मैं बॉस को सूचित करता हूं।

जैकब ने ट्रांसमीटर निकाला और शाकाल से संपर्क किया।
बॉस! मैं जैकब बोल रहा हूं। हमारे डबल एजेण्ट कर्नल राघव को लेकर घर से निकल पड़े हैं। लगता है, वे अपने मिशन में सफल हो गये हैं।
ठीक है। उन्हें लिंक रोड पर पिकअप कर लिया जायेगा, लेकिन सुरक्षा के तौर पर तुम उन पर नजर रखो।
यस बॉस!
अगले ही पल जैकब की कार राम-रहीम की कार के पीछे दौड़ पड़ी।
राम भइया! अगर मेरा संदेह गलत नहीं है तो हमारा पीछा किया जा रहा है।
मुझे भी ऐसा ही संदेह था। तुम गाड़ी लिंक रोड की ओर ले चलो।
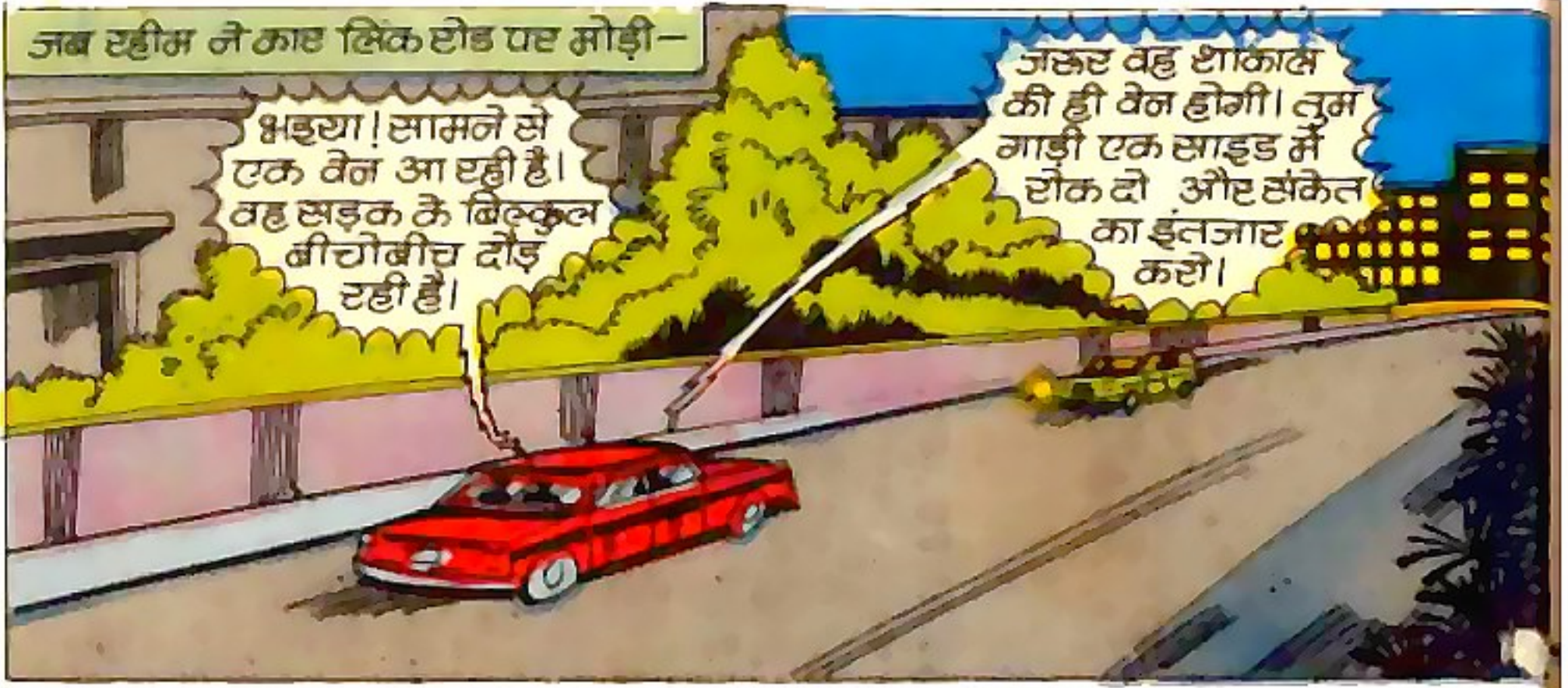
जब रहीम ने कार लिंक रोड पर मोड़ी—
भइया! सामने से एक वेन आ रही है। वह सड़क के बिल्कुल बीचोबीच दौड़ रही है।
जरूर वह शाकाल की ही वेन होगी। तुम गाड़ी एक साइड में रोक दो और संकेत का इंतजार करो।
रहीम ने जैसे ही कार रोकी, वेन भी रुक गई और उसकी हैडलाइट्स जलने-बुझने लगीं।
चन्द्र का बताया सिगनल उस वेन से प्रेषित किया जा रहा है राम भइया!
इसका मतलब यह हुआ कि वह हमें उस वेन तक पहुंचने के लिए इशारा कर रहे हैं।
● क्या राम-रहीम शाकाल तक पहुंच पाये?
● वास्तव में शाकाल कौन था और वह कर्नल राघव से क्या चाहता था?
● क्या शाकाल पकड़ा जा सका?
● नकली रहीम का क्या हुआ?
● इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए "मनोज कॉमिक्स" के आगामी सैट में पढ़ें—
"राम-रहीम और आकाश का प्रेत"